CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

10-4

चतुर चिन्तामणि

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

य-ग्रन्थालय
करौंदी, वाराणसी-५
२१३/8

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

चतुर चिन्तामणि।

(१-२-३ प्रकाश)

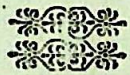

योगिवर्य-

स्व० महाराज श्री चतुरसिंहजी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रकाशक—
पं. धनलाल शर्मा द्विवेदी
भारतीय-पुस्तक-भण्डार
उदयपुर

आम्नाय—ग्रन्थालय,
[illegible]निधि, [illegible]
वाराणसी-5

वि० संवत् २०१२

मुद्रक—
पं. भीमशंकर द्विवेदी
आदर्श मुद्रणालय
आदर्श विद्या-मन्दिर (उदयपुर)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

चतुर चिन्तामणि।

पेंलो प्रकाश

जिहि ठां भूषण सी भई, भृगु भूसुर की लात।
तिहि ठां मेरी बात हू, अंगीकृत व्है, नाथ ॥ १ ॥
मुहिं दीनहिं अस मन दियो, काहे दीनदयाल।
सुरझि न आवे तव शरन, उरझि २ जग जाल ॥ २ ॥
उन उरझीली अलक पै, जो मन अरझे नाँहि।
तो उरझेगो ताहि की, माया ही के माँहि ॥ ३ ॥
यद्यपि अनुग्रह करत अति, अमित बार यदुनाथ।
मन मेरो तोहू जथा, गांधारी को नाथ ॥ ४ ॥
राम रावरो आदि के, विरद गरीब निवाज।
मोर दीनता देखि कै, सो कहँ विसरो आज ॥ ५ ॥
तुम शरणागतपार तो, हौं शरणागत पार।
तुम जो अधम उधार तो, हौं हूँ अधम उधार ॥ ६ ॥
मोहू सो चाहो अधिक, अधम उधारण आन।
तो तुमहू के लोभ को, थोभ नहीं भगवान ॥ ७ ॥

४—आँधो।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अपने कीने जानि कै, तजौं न हौं निज पाप ।
त्यों अपनो अनुमानि के, मुहि न बिसारो आप ॥ ८ ॥
तुमरी माया साँवरे, हम तो तजिहैं नाँय ।
तो हमरो का वस चलै, जो तुम देहु छुड़ाय ॥ ९ ॥
जो मानुष मोकों विरचि, विमुख आपसों कीन ।
तो मानुषता को कही, कौन पदारथ दीन ॥ १० ॥
पशु ते यही विशेषता, नर में मोहि लखाय ।
पशु अनजाने भ्रमत जग, नर जानत ही जाय ॥ ११॥
जो नर तन कौं पाय कै भजै न सियरघुराय ।
तो खरतन ते सौगुनो, गुनै गुनी नित ताय ॥ १२ ॥
मेरो मेरो करत है, तेरो कहा विचार ।
तन हू लेरो ना करे, होत छिनक में छार ॥ १३॥
मूत्र मूल यह तन धर्यो, पुनि मल भर्यो अपार ।
भर्यो पर्यो सो अशुचि है, सर्यो सर्यो भौ छार ॥ १४॥
राति दिवस दुहुँ पांव सो, आवत मीच नगीच ।
सींचि रह्यो तउ विषयतरु, रे मन निर्भय नीच ॥ १५॥
तो हू उत्सव करत है, अहो अनागत पीर ।
नये वर्ष के संगही, जूनो होत शरीर ॥ १६॥
कीनों का करिबो कहा, करे कहा सों हूँढ ।
भूले फूले मत फिरे, करिबो मर्यो न मूढ़ ॥१७॥

१५—मीच = मौत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

घड़ी घड़ी निरखे घड़ी, बढ़ी काम की चाह ।
बहै घड़ी तोको खड़ी, सुधि आवै की नाँह ॥ १८॥
अर्थ धर्म अपवर्ग को, तिय तिबलि बलि कीन ।
काम क्रोध अरु लोभ को, तियतिबली बली कीन ॥ १९॥
लैं धरणी में अलभ तनु, है हरिणीदृग लीन ।
वैतरणी के तरण की, तैं करणी नहिं कीन ॥ २० ॥
चिता शरन जो करन तो, पिता कबन सुख देत ।
कर नारी बिन होय तो, घरनारी केहि हेत ॥ २१ ॥
हाथी साथी होत नहीं, छय ते हय न बचात ।
रथ न मनोरथ देत सँग, पद न पदाती जात ॥ २२ ॥
निधन होन जो अवसि है, तो धन सों का काम ।
धूरी धरो उहि धाम पै, जो जानो जमधाम ॥ २३ ॥
मेरो तन मेरी तिया, मेरो विभव विशाल ।
सो सब मेरो अवसि है, जो नहिं मेरो काल ॥ २४ ॥
कहा पूत तब काम के, जब जकरे जमदूत ।
सो विभूत का करही जो, आपहिं होत विभूत ॥ २५ ॥

१९-तिय = लुगाई । तिबली = पेट पर की आड़ी तीन रेखा । बलि = भेट ।

२१-कर = हाथ । नारी = नाड़ी और लुगाई ।

२२-छय = मौत ।

२५-विभूत = धन और राख ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनहोनी को हृदय में, कलपत कोटि प्रकार।
अवसि होनि को अवसि तैं, दीनी दूरि बिसार ॥ २६॥
अवागमन मिटान को, नाम नेह रस चाख।
लाख जतन कर राख तन अन्त होयगो राख ॥ २७॥
नरतन काची गागर ज्यों, गरत न लागे बार।
क्यों नरतन कों पाय कर, करत न राम सँगार ॥२८॥
अरुझया दार अगार में, भज्यों न नन्दकुमार।
अन्तसमैं पछिताय है, अन्त समै की बार ॥ २९ ॥
जो टेरो तैं राम को, तो बेरो भवपार।
नाहित फेरो जगत को, परिहै बारंबार ॥ ३० ॥
साधन बिना न पूरी है, कबहूँ मन की साध।
बाद न जनम बितावरे राधावर आराध ॥ ३१ ॥
सगरो जग स्वार्थी अवसि, अपनो एकहु है न।
पारथसारथि त्यागि कोउ, आरति टारे सके न ॥ ३२ ॥
सीतापति पति पाय कै, जो पतियानो नाय।
सो भूपति के द्वार पै, विपत उठावन जाय ॥ ३३ ॥
अरे मन्द मत परहि तूं, लखि भव फन्द अनेक।
द्वन्द मिटावनहार तो, श्री रघुनन्दन एक ॥ ३४ ॥
छनक तनक नहिं बिसरिये, जनकसुतापति जान।
कनक भवन में रहत जो, मन कर कहीं महान ॥ ३५ ॥

३१—बाद = व्यर्थ। ३२—पार्थसारथि = श्रीकृष्ण।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पढ़े लिखे मैं का पढ्यो, यही समुझिबो सार।
जो समुझावे सबन को, सो तूं समझ विचार ॥ ३६॥
लाभ लख्यो जैसे सहे, कुटिल कष्ट अति घोर।
हरि हिततेहिं आधो सहे, तो सब सुधरे तोर ॥ ३७॥
पंथ अनन्त विचार कै, चलै न एकौ पांव।
घर बैठ्यो नर कोनहू, गयो न अपने गांव ॥ ३८ ॥
चाहे कोटि कलान की, मुख पे कीजै बात।
जानत सब की जान की, सदा जानकीनाथ ॥ ३९ ॥
जो मन को कछु हटकि कैं, करे ईश की ओर।
तो सुमिरण सामा सकल, जो विसरन की ठौर ॥ ४०॥
राम नाम दो प्रेम सों, कहि कछु हृदय विचार।
पहिलो दीन दयाल अरु, दूजो अधम उधार ॥ ४१ ॥
राम रावरे नाम में, येह अनोखी बात।
दो सूधे आखर तऊ, आखर याद न आत ॥ ४२ ॥
राम रावरे नाम को, ऐसो प्रकट प्रताप।
सुमिरत प्रगटत प्रेम पुनि, प्रगट होत हो आप ॥ ४३॥
तीन बात को त्यागि कैं हरिजन और चहै न।
हरि सुमिरण के हरि कथा, हरिजन दर्शण नैन ॥ ४४ ॥
चाहे को यह चाहिबो, गाये को यह गान।
कृष्णनाम मुख सों कहैं कृष्ण चरण में ध्यान ॥ ४५

३९—जान की = मन को।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री व्रज (महिमा)

सब ते ऊँचो हरि कियो, ऊँचे कर गिरधार।
तासो ऊँचो आन कह, ताको नीच विचार ॥ ४६॥
ज्यों ज्यों उतरत जमुन जल, पान करन सोपान।
त्यों त्यों चढ़त प्रवीन नर, प्रभु पावन को पान ॥ ४७॥
जिन मन्दिर में रहत नित, छवि मन्दिर घनश्याम।
तिन की का महिमा कहौं, धाम २ में धाम ॥ ४८ ॥
सकल तीरथन सों वही मांगत हौं वरदान।
वृन्दावन के वासकों, देहु दया करि दान ॥ ४९ ॥
सकल धाम घनश्याम के, सबहिन में घनश्याम।
वै श्री कीरति कुवँरि सह, राजत श्री व्रज धाम ॥ ५० ॥
बिन ध्याये राधारमन, बिन संतन के पास।
बिन वृन्दावन वास के वृथा जात ये सांस ॥ ५५ ॥
दोहा संतन हित रचे, जिन के कोहा नांहि।
जिन कों सोहावे नहीं, ते जिन बांचो याहि ॥ ५२ ॥

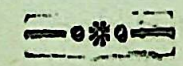

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ ॐ ॥

चतुर चिन्तामणि।

दूजो प्रकाश-पदावली

(१) श्री जगदंबा।

शंकरी

शंकरी शरणे थारे आयो, ईश्वरी महा अधम अपणायो ॥
भावे त्यूँही राख भवानी, जावे कणी जगायो।
अलगो कदी करे मत अम्बा, खोला में खेलायो ॥ १ ॥
जणी जणी ने कूँकर जोधे, जननी थारो जायो।
चलबींध्या ने पगाँ चालणो, थेंही शिवा सिखायो ॥ २ ॥
डगमगता डगता ने दुर्गा, छाती शरो छिपायो।
तरस्यो भूखो जाण तारणी, दूध दयारो पायो ॥ ३ ॥
बालक रो सब बोझ सर्वदा, पोते आप ऊँचायो।
माता कदी कुमाता नीव्हे', पूत कपूत सदा यो ॥ ४ ॥
पड़छे पड़छे परा प्रेमशूँ, परमेश्वर पिछणायो।
मोह करेमे माँ मूरख रो, चातुर" नाम चलायो ॥ ५ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(२) दरशण*।

जननी अब दरशण कद दोगा : पूरण पंडित जाण पालोगा।
माता फेर दरश कद दोगा।
घरमें बँध्यो अजाण बाछरु, ईं ने कद सुमरोगा।
दया दृष्टि शूँ देख अणी ने, कद खोला में लोगा॥ १॥
माथे हाथ फेर मोरां पे, कद बोछड़ो को'गा।
ईं कपूतरी कबदां ने भी, गुण ही आप गणोगा॥ २॥
सो सो करे सपूत चाकरी, तो भी नी विसरोगा।
यो विष खावा टगी करे पण, आप अमर फल दोगा। ३।
यो खाड़ा आड़ी दोड़े पण, ले कैलाश चढ़ोगा।
आनन्दी शंकर गोदी में, आपहीज मेलोगा॥ ४॥

(३) श्री मर्यादा पुरुषोत्तम।

बधाई

आज अमोल बधाई देवूँ, हेली म्हूँ बलिहारी व्हे'वूँ।
चार कुँवर राजारे, जनम्या, कई कई सुख केवूँ॥ टेर॥
थूं पणघट पूगीव्हे' गाने, म्हें या सुणी बधाई।
पे' ली पे'ल थने के'वाने, या म्हूँ दौड़ी आई॥ १॥
वी शुण नगर नगारा बाजे, घर घर मंगल गावे।
अवध पुरीरा नर नार्याँ रे, मन में मोद न मावे॥ २॥
आंख प्रभाते आछी फरकी, मूंडो देख्यो थारो।
घणाँ दिनाँरो मनरो चायो, आज व्हियो आँपाँरो॥ ३॥

*यो पद गणगौर बलावारे वगत बणायो हो।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चाल चाल झट चालां सजनी, गावां जनम वधावा ।
अणी तरेरा ओजू आछंव, जनम जनम में पावां ॥ ४ ॥
धन्न धन्न है भाग आपणा, थारे मूंडे गोल ।
गोल कई अमृत है हेली, अमृत वचे अमोल ॥

(४) चाकर

म्हेंतो छांजी चाकर वांका, म्हेंतो ठेठ जनम जनमांका ।
वाज राज नीलारे म्हें तो, सदा पागड़े लागां ।
सांदो सरल सुभाव सदासूं, ज्यांका करतव वांका ॥ १ ॥
धीर गम्भीर दयारा सागर, स्वामी जनकसुताका ।
अवधपुरी रा युवराजाँ रा, सुत दशरथ राजा का ॥ २ ॥
गुण सिखाय सामो गुण माने, अवगुण भूले म्हांका ।
दया दृष्टि शूं रहे देखता, मालिक अश्या कणांका ॥३ ॥
वासव रा सिंहासण पर री, परवा पण नी राकां ।
अंतस मांय रिया वश म्हांणे, पेंता पेंतावांका ॥ ४ ॥
मुजरा मालुम नत्त करावां, डोड्यां दो वगतां का ।
वालपणा शूं ही वांकव छां, मारग सब महलां का ॥५॥
सरजूजी में स्नान करां छां, कलस भरां सोना का ।
निमि वंश्याँ रघुवंश्याँरी श्री में, मीठी गुणां मजाकां ॥६॥
सति अरुंधति गुरु वसिष्ठ रे पगां, प्रभाते लागां ।
सीताराम चरण कमलां में, चतुर प्रेम वर मांगां ॥७॥

४—वासव = इन्द्र । अंतस = मन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(५) जाण घणी ।

दूजाँरी तो दूजा जाणे, म्हाँणे तो या जाण घणी ।
धणियाणी निमिराज कुमारी, म्हांणे दशरथ कुंवर धणी ॥ १ ॥
कुंवर चार ही अवधनाथ रा, कुंवर्यां मिथिला नाथ तणी ।
बास अयोध्या सरयू तट पे, महल बगीचा महल बणी ॥ ॥ २
सेवासंदा परम सुखदाई, भजन भांवरी प्रीति लणी ।
कहे "चतुर" ईं सुखने पायो, युगल कृपा शूँ कणी कणी ॥ ३ ॥

(६) श्री गुरू दयाल शूँ ।

घटरी गम ।

गुरुजी म्हाँने आछा आप शिखाया । अणीरी घटही में गम पाया ॥
बुगला रा सुभाव बदलाया, काका हँस बणाया ।
तारा तणा उजाला माँहे, अचरज घणा बताया ॥ १ ॥
सूरज शीश ऊपरे ऊगो, चन्द्र प्रकाश सवाया ।
बिन बादल बादल बहुरंगी, चेतन नभ में छाया ॥ २ ॥
पाणी बरपरियो परनालाँ, सुरता अंग भिजाया ।
बिन ही तार सितार सुणाया, बिन ही कंठ गवाया ॥ ३ ॥
छेटी जाण रिया नर छेटी, घणा नखे नरखाया ।
विश्व वण्यो बारूद चित्र ज्यूं, अनुभव आग लगाया ॥ ४ ॥
जूना पुन्न जुगादी जागा, सघला पाप शमाया ।
बिन गुमानरा जद *गुमान गुरु "चातुर" चौड़े पाया ॥ ५ ॥

---

*—काका = ठा० सा० श्री गुमानसिंहजी बाठरड़ा ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(७) गुरु गमरो गैलो ।

गुरु गमरो गेलो न्यारोरे, भुगतीरो मारग न्यारो रे ।
ईंने जाणे जाणजा वालोरे, भगतीरो रस्तो न्यारो रे ॥
थिर बैठेतां पंथ कटेने, दोड़्यां बधे अपारो रे ।
अण देख्यां ही धौड़ै दीखे, देख्यां होय अंधारो रे ॥१॥
अही पड़े तो ऊंडो कूड़ो, वही पड़ेतो खाड़ो रे ।
अही वही ने कठी न देखे, पावे पद परवारो रे ॥२॥
नाल निशरणी खुरी न खूँटो, झट चढ़णी झूलारो रे ।
दूरो घणो नजीक घणी है, जरयो वलावो, ज्याँरो रे॥३॥
कोइक ईमें मील वणावे, कोइक करे उजालो रे ।
कोइक घुंगल बजाय बतावे, यो सब समझ इशारो रे ॥४॥
पढ़णो चढ़णो घटणो वढ़णो, यो सब काम गुणांरो रे ।
"केशवराम" रामने पा'णो, घर न्हाणो गंगारो रे ॥५॥

(८) ज्ञान परेवा ।

अवधू ईंडा मांय परेवो, यों तो नी गेरो नी शेवों,
शेवो तो शागे वण बोले, जोवेतो जलजेवो ।
यो ईंडामे ईंडो ईंमें हलमल घलमल व्हे' वो ॥ १ ॥
ऊंडो उतर करे ऊँकारा उड़ आकाश मिले वो ।
रूप रंग ने रेख विनारो, देख दंग व्हे'रेवो ॥ २ ॥

१—ज्ञान परेवा = आत्मरूप कबूतर ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यूं नी यूं नी सब कर थाक्या, यूं भी है वो ।
ज्यूं ज्यूं व्हेवे हिरदो निरमल, त्यूं त्यूं रंग चढ़े वो ॥३॥
ज्योज्यो करे जाणवा ईंने, बोवो पोते व्हे' वो ।
विना चांचरो चुगे निरन्तर, दीखे नी देखे वो ॥४॥
रातो धोलो श्याम घुँशालो, रज मूंतज टाले वो ।
"रामरतन" री परख पादरी, ईंज्यूं री ज्यूं व्हे' वो ॥५॥

(६) ज्ञान बकरी शूं ।

या तो बकरी है बहुरंगी, यातो श्याम सफेद सुरंगी ।
बीजू एक बासना लोगो, ईंरे संग असंगी ।
ईं बकरी रे बकर्यां जनमी, वी पण असी तरंगी ॥१॥
सात जनम ने शोला जनमी, यां में बड़ी कुलंगी ।
बासठ साठ साठ ने बासठ, यूं वध आंक उलंगी ॥२॥
एक एक ने चरे उपाये, एक एक शूँ चंगी ।
बकरो विछड़ अणीने देखे (तो) दीखे एक अभंगी ॥३॥
ईं जोड़ी ने जाण सके नी, शिव ब्रह्मा शारंगी ।
ईं जोड़ीरे बसवा सारू, रही न जगा अछंगी ॥ ४ ॥
एक एक रे रिया आशरे, तो पण छड़ा छड़ंगी ।
ईं बकरी रा जो गुण जाणे, बीरों पंथ विहंगी ॥५॥

(१०) साधना ।

मन थूं राम नाम ने रट रे, दूजी झूंटी सब झंझट रे ।
यूंही अठे अनेकां उपज्या, गिया अनेकां मिट रे ॥१॥

१—ज्ञान बकरा = सांस समझ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(७)

कोई कीरो सगो न साथी, स्वारथरी सटपट रे।
पाणी टके न प्यास बुझे यूं घणो जोजरो घट रे ॥२॥
ईं खोटी खटपट में यूँ ही, ऊमर जावे कट रे।
दुरलभ रतन मिल्यो मनखातन, क्यूँ फेंके फोगट रे ॥३॥
नीच ऊँच रो नरणो कीधो, सब पुराण परगट रे।
तों पण ईं पे ध्यान न देवे, हिये अणूती ठह रे। ॥४॥
राम कणीरो भलो करे वो, शके न खलने खट रे।
गजरीचाल भुशे लख गंडक, यूं सज्जन ने शठ रे ॥५॥
साज ऊपर ज्यूं राज नाख्यां, माथे पड़े पलट रे।
ध्यान धणी रो राख निरन्तर, ज्यूं भमरी री लट रे ॥६॥
सुरता रे तागे चढ़जाणो, वरत परे ज्यूं नट रे।
हठ कर "रूपा कीने हेरे, घट घट में परगट रे ॥७॥

(११) समय सांचवण।

कर २ वृथा थंथ दूजाँरों, वेंडा वगत गमाणो सारो।
वी आछा ने वी खोटा तो, वी भोगेगा वाँरो ॥
वीं यूं कीधो वीं यूँ कीधो, थें कई कीधो थारों ॥१॥
काम पड़्यां पे काम न देवे, जोर जीभ होठां रो।
बातां में हाथां मूँ खोयो, मूँगो मनख जमारो ॥२॥
थूँ आयो ने थें पण आवो, ओजूँ आप पधारो।
यूँ आवा में आयगियो यो, वो दिन वीछड़वारो ॥३॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धो तो कीधो यो कर लेवूँ, अतरो अब करवा दो ।
करवो तो यूँ मिल्यो नहीं ने तेल नख्यो दीवारो ॥४॥
थोड़ी वगत मांयने करणो, घणो काम करवारो ।
चेना सारसार ले'लेणो, यो दिन नी आवारो ॥५॥

(१२) समय रो करतव (चेतावणी)

दिन ऊगे ने रात पड़े, ईमें सभी वणे विगड़े ।
कणी वगत तो हरया रूं खड़ा, कणी वगत में पान झड़े ।
एक उतारू डेरा देवे, ले खड़िया ने एक खड़े ॥१॥
कठी उगाड्या झड्या कमाड्या, कठी उगाड्या पराजड़े ।
कठी काठरी करे खाटल्यां, घोड्यां तोरण कठी घड़े ॥२॥
कठीक बोले रोय रींकने, कठीक गावे जान चढ़े ।
घोडी एक अनेक चढ़ाका, चढ़ उतरे ने उतर चढ़े ॥३॥
यो तो हाट वाट रो मेली, मिले विछड़ ने मिल विछड़े ।
एक जश्यो नी रे' वे कोई, शगत सबांने मांजपड़े ॥४॥
कोई नवो व्हियो नी व्हेवे, वठी छपेने अठी कड़े ।
अठी वठीरा वठी वठीरा, राई घटे न तली वढ़े ॥५॥
जमा होय तो खरच करे ने, मूल होय तो व्याज चढ़े ।
"हीरालाल" हाल में रेणो, एक तोल ने दो पलड़े ॥६॥

(१३) अस्थिरता (चेतावणी)

रे मन मन छन हीं में उठ जाणो ।
ईं री नी है ठोड़ ठिकाणो, अरे मन छन ही में उठ जाणो ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

साथे कई न लायो पे'ली, नी साथे अब आणो ।
जी वी आय मिलेगा आगे, जी जी करम कमाणो ॥१॥
सौ सौ जतन करे ई तन रा, आखर नी आपांणो ।
करणो व्हेसो झटपट करले, पछे पड़े पछताणो ॥ २ ॥
दो दिनरा जीवा रे खातर, क्यूं अतरो ऐंठाणो ।
हाथां में तो कई न आयो, वातां में वै' काणो ॥ ३ ॥
कणी सीम पे गाम वसावे, कणी नीम कमठाणो ।
ई तो पवन पुरुष रा मेला, चातुर भेद पिछाणो ॥४॥

(१४) गाफिल (चेतावणी)

यूँ कँई पड्यो पसर ने डाकी, थारे कणी जगा जावाकी !
कठीं पगरखी कठी अंगरखी, कठी पागड़ी न्हाँखी ।
टिगट टेमरी खबर खोज नी, कटगी गांठ टकाँकी ॥१॥
घर घर जाण व्हियो थूं गाफिल, रेल घणी दौड़ाकी ।
चढ़े जणी ने पड़े उतरणो या है रीत अठाकी ॥२॥
आयो कठूं कठे उतरेगा, कतरा टेशण नाकी ।
खादी भांग गांलमा कीधा, बोतल पीधी आखी ॥३॥
कूण सुणे ने कीने केवां, हालत हाय नशाकी ।
"शंकर" सावधान व्हे जाणो, देख दशा दूजां की॥४॥

(१५) बूढापो (चेतावणी)

अबे तो ई अबका दिन आया, जणा में व्हे'ग्या सगा पराया ॥
काला हा जी धोला व्हे'ग्या, धोला खर खसकाया ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लकड़ी साथ देह खड़ी रे, कांपे शिरने काया ॥१॥
ऐंकारा खेंकारा करता, व्हिया खाँस ने काया ।
वणाँ दिनाँ तो ई दिन विसर्‌या, दलति वलति छाया ॥२॥
अणाँ दिनाँ भी वी दिन भूलो, अँवला क्यूं उलझाया ।
फरे फेंकड्यां फेरी देती, घूघा भी घुरकाया ॥३॥
मोती वींधनजर ही वी में, विन्द मोतियां आया ।
भूल भूल सब अणी वगतने, फूल फूल कुमलाया ॥४॥
उदर मांय तो अन्न पचेनी, गला घणा गटकाया ।
दीधा वणी घणी ही लीधा, शली शली समकाया ॥५॥
सामो वोझ पड्यो अब फोरो, क्यूं व्हे णो जद काया ।
समता राख शरण लो वींरी, छोड़ो ममता माया ॥६॥

(१६) चार भावना ।

आपणे कई कणी रो लेणो, सब संप राख ने से'णो
राम दियो जो लख ललाट में, वीं में राजी रे' णो ।
हलकी भारी खम लेणी पण, कड़वो बोल न के'णो॥१॥
सुख दुख तो भुगत्यांही छूटे, पुन्न पाप रो लेणो ।
आखर यो सब छोड़ अठेही, वीर एकला व्हे'णों ॥२॥
क्रोड़ उपाय करेगा तो भी, ह्वे गा ज्यो ही व्हे'णो ।
मनखा जनम मिल्यां मुशकिल शूं, लाभ अणी रो ले' णो॥३॥
जीव जंत ज्यूं मृग तृष्णा, में विना अरथ नी व्हे'णो ।
मूरख मनखाँ रो मेणो ही, महा व्रती रो गेणो ॥४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राम नामने सुमरण करणो, वण आवे सो देणो ।
+चार भावना राख चालणो, के दीधो जो के'णो ॥५॥

(१७) मूंगी मनखा देही ।

मूंगी मनखा देही पाई , मनवा खूब समझ ले भाई ।
चढ़े तो॥चार पदारथ पावे, पड़े तो नरकां जाई ॥
आलस छोड़ लागजा आरम्भ, दो दिन पछे पराई ॥१॥
चावे जतरी करले ईं में, मनशा भुजब कमाई ।
शाँशा शाटे करले शोदों, आगे है अथकाई ॥ २ ॥
तक चूक्यां तकता रे' जावे, पाछी मिले न पाई ।
नाल मांयने गोली छूटी, ठेरे कतरा तांई ॥३॥
जो मेनत शूं जीव छिपावे, अठी वठी अलसाई ।
वा मेनत तो घणी पड़ेगा, विलप विलप विनशाई ॥४॥

(१८) (मन ने) के'के'थाको ।

म्हूँ तो के'के' थाको तोई, थूं तो हेतो बोरो बोई ।
म्हूँ जाणूं के राम भजे थूं, झख मारे बक होई ॥
एक पलक मत खो' म्हूं कूँ', थें आखी ऊमर खोई ॥१॥
म्हूँ जाणूं मन्दिर में बेठो, ने'ण मूंद ने दोई ।
थूं तो निकल न्यावटा लागो, जाय पराई जोई ॥२॥

+मैत्री १ उपेक्षा २ करुणा ३ मुदिता ४ झख = मछली
॥धर्म १ अर्थ २ काम ३ ने मोक्ष ४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

म्हूँ जाणूँ के लोक सुधारे, के परलोक करयोई ।
पशुआं रा पन्थाँ में पड़ने, थें तो खोई दोई ॥३॥
म्हूँ जाणूँ परमारथ साधे, स्वारथ ने बिसरयोई ।
पेट पालवा मान बधावा, थें या जुगती जोई ॥४॥
म्हूँ कूँ, चाल वगत है थोड़ो थूँ के हाल नरोई ।
म्हूँ कूँ' अठे घणो मो' भटको, थूँ के' बड़ी मजोई ॥५॥
म्हूँ जाणूँ के नवी करी थें, करी कमाई खोई ।
म्हूँ केवूं के अठी चालजे, थूँ चाले अँवलोई ॥६॥
मान मान मन चतुर मनावे, वण वण ने थारोई ।
ईंतर व्हे'तो अठी आवजे, नीतर रे' न्यारोई ॥७॥

(१६) ई घोड़ा चौगान

मायला मुरजी व्हे' तो मान, नीतर ई घोड़ा चौगान ।
नीतर ई घोड़ा चौगान, मनवा मुरजी व्हेतो मान
नीतर ई घोड़ा चौगान ॥
दीघाँ लागे डाम देह पे, घट में उपजे ज्ञान ।
आंखांरी आशे नी आवे, कई करे जद कान ॥१॥
भलो बुरो ने पाप पुन्न थूं, कश्यो न शके पछाण ।
थारी कशी अजाणी पण थूं, जाण वणे अणजाण ॥२॥
सूतो व्हेतो सहजां जागे, जाण शके अणजाण ।
जागत सूतो जाणत गे' लो, जाग शके नी जाण ॥३॥
आगे आगे भागरियो थूँ, हेर रियो हेराण ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पाछे पाछे दोड़ रियो है, कद कोई कल्याण ॥४॥
मनखा देही मूंगी पाई, पाई सन्त पञ्चाण ।
पाई परी गमाई जदतो, "चातुर" मूढ़ समान ॥५॥

(२०) दो हीज बात ।

जग में दोहिज बात जणाई, अणीरा दीधा नाम नराई ।
जमा खरच ने देज लेज ने उधरत और उधाई ॥
करणी भरणी भी केवे ने, बावण और लणाई ॥१॥
करणी ने उद्योग कहे, वा भरणी भाग गणाई ।
लेज करे जद समरथ वाजे, देज वगत दासाई ॥२॥
पुन्न पापरी बावण होवे, सुख दुख पड़े लणाई ।
ऊमर जमा खरच व्हे' ई में, घटे वधे नी राई ॥३॥
उधरत करम अनाणूं कीधा, अबके पड़े उघाई ।
नवरो ईं शूँ कोई नी है, तृण शूँ ब्रह्मा ताँई ॥४॥
ईं में ही अण समझ्या उतरे, समझ्या करे चढ़ाई ।
ईं ने ही संचर प्रति संचर, कहे सांख्य समझाई ॥५॥

(२१) जीभ ही जड़ है ।

जीभ ही सब दुख दुख री जड़ है,
अणीने वश राखे सोई बड़ है ॥
जड़ चेतन रो नाप करे या चौ आंगल चामड़ है ।
दो बत्तीसां मांय दबाई तो पण जावे कड़ है ॥१॥
विष अमृत रो वास अणी में ई में ही चढ़ पड़ है ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ईं शूँ मिले हेत कर कर ने ईं शूँ जावे लड़ है ॥२॥
ज्ञान कर्म ने जल अगनी या चाराँरी चोपड़ है।
ईं शूं फिरे निरोगी देही, ईं शूं जावे पड़ है ॥३॥
या सन्तोष करे कोरी में या चावे चोपड़ है।
याही केवे सांच पाधरी याही झूंठी घड़ है ॥४॥
आखो ही आधीन अणीरे गुण तीनांरो गढ़ है।
या संजीवन बूंटी है या सड्यो नकामो खड़ है ॥५॥
ईं कवाण रा वचन बाण शूँ भमे नहीं मा भड़ है।
"कान्या" कामधेनु है याही बुरी ढोर वांगड़ है ॥६॥

(२२) भारतवांचो।

सभी नर भारत वांचो रे, सही सुख यो हिज सांचो रे।
घरो घर भारत वांचो रे ॥
भारत में अवतार लियो ने भारत शूँ अणजाण।
बी भारत रा पूत नहीं पण भारत रा पाषाण ॥१॥
भारत शूं भ्रमणा मिटेरे भारत शूं भय जाय।
भारत ने भगवान वणायो, सुख रो सांचउपाय ॥२॥
भारत यो रतनागर सागर 'ईरो छेह न पार।
सारा ही नर नार विचारो वेदाँरो अवतार ॥३॥
भारत भार उँचायो सबरो आरत भार उतार।
भारत व्हेतां ईं भारत रो, यो कई हाल अवार ॥४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(२३) जगावण ।

जागो जागो रे भारत रा वीरां जागो ।
थाँणो कठे केशरयां वागो ॥
थें हो पूत वणाँरा जाया, (ज्याँरो) जश सुरगाँ तक लागो ।
अवे एश आराम वासते, मत कूकर ज्यूं लागो ॥१॥
दारू दुरजन संग निवारो पर दारा ने त्यागो ।
यो आलस रो अवसर नी है सोवे सोहि अभागो ॥२॥
अँगरेजाँरी अक्कल सीखो अवगुण छोड़ो आगो ।
ऊभा मूत्यां मत नी आवे समै काम शर लागो ॥३॥
इंद्रियां जीत जीतरयो मनने सो सरदार सभागो ।
यांरो होय गुलाम रहे सो कुल ने देवे दागो ॥४॥
रैंत पाल रजपूती राखो ईश्वर में अनुरागो ।
छोड़ो झूँट घमण्ड खारने पल पल पग दो आगो ॥५॥

(२४) वीर प्रताप ।

राणा धीर धरम रखवाला थूँ रघुकुल रा वटवाला ।
थूँ रजवट रा वटवाला !!
वीर प्रताप रामरा पोता जशरा जगत उजाला ।
भलां पालणो खलां खपाणो चोसट घड़ी आपरा चाला ॥१॥
दो दरियाव तर्‌या इक साथे चेटक चढ़वा वाला !
खम्या क्रोड़ दुख छोड़ सभी सुख खम्या न खोट खवाला ॥२॥
मेवाड़ा मेवाड़ वणाई रजवटरी पटशाला ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एड़ीठोड़ न दियो अंगोठो बढ़तो गयो बढ़ाला ॥३॥
थारो नाम कान सुण होवे मुकना मद दंताला ।
मनखाँ पणो सिखायो सागे मनख मात्र रा बाला ॥४॥
खोटांरी छाती में खटके हाल हाथ रा भाला ।
एकलिंग रे रिया आशरे दिया दुशमणाँ टाला ॥५॥

(२५) म्होटी बात ।

या मनखां म्होटी बात, मरणो जाणणो ।
मरणो मरणो सारा केवे मरे सभी नर नारी रे ॥
मरवा पे'ली जो मर जाणे तो बलिहारी रे ॥१॥
जीवा शूं सघलो जग राजी मरणो मन नी भावे रे ।
राजा रङ्क सरीखो सबरे तो पण आवे रे ॥२॥
दूजा भूप डरप म्लेच्छाँरी कीधी ताबेदारी रे ।
वीर प्रताप जाणने मरणो टेक न टाली रे ॥३॥
गुरु गोविन्द रो बामण भूल्यो बालक दो चुणवाया रे ।
भामा शाह धण्यां ने धन दे जाता लाया रे ॥४॥
मरवा ने बनवीर वीसर्यो घाय याद कर लीधो रे ।
चुँखायारे शाटे जायो जातो कीधो रे ॥५॥
मरवा ने जो जाणे वींशूँ पाप करम नी व्हेवे रे ।
सुख दुख री परवा नी राखे प्रभु ने सेवे रे ॥६॥
मरने जाव रामने देणो या जींरे मन लागी रे ।
'चातुर' चरण वणीरे लागे वो बड़ भागी रे ॥७॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(२६) अँवली रीत ।

अरे मन या कई अँवली रीत ।
यों तो थारे सागे व्हेग्यो शीत, अरे मन या कई अँवली रीत ।
चड़वा री तो चरड़ पड़ी ने पड़वारी है प्रीत ।
आपांरी आशे नी आवे पेलाँ री परतीत ॥१॥
शूरा पण रा शब्द भूल ने गावे गतिया गीत ।
घर में करे प्रेम ने ममता घर में फूट फजीत ॥२॥
आलस ने आराम गणे ने मेनत शूँ भयभीत ।
थां लखणाँ शूँ या गत व्हे'गी'तो पण नीच नचीत ॥३॥
आंखाँ देख फेर नी माने ई रे आगे भींत ।
कवे "चतुर" चेत जा, नीतर बगत जायगा बीत ॥४॥

(२७) फूट फजीती

मेटो मेटो रे या फूट फजीती मेटो ।
अवे मती पलाँ पेठो, मेटो मेटो रे या फूट फजीती मेटो ।
थाँ समझ्याँ रो सम्प देख ने श्वान करे शिर हेटो ।
दूजो देख एक व्हे' वी तो मिलो फोड़ थें पेटो ॥१॥
दूनारे तो पाँच एकसो भणे भीम ने जेठो ।
धर्मराजरा वचन याद कर बगड़ी बात शमेटो ॥२॥
छोरू माइत बन्धु मित्र गण एक एक ने वेठो ।
भरत राम ज्यूं भर भर बार्या भाई भाई शूं भेटो ॥३॥
सारंडा ज्यूं दो गर्दन पण एक आपणो पेटो ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मूरख विमुख नीच पद पायो कर कर घर में खेटो ॥४॥
फूटे हियो करम जद फूटे ठीक ठेठ रो नेठो ।
"चातुर वरण आश्रम वालो यो भारत जग गुरु जेठो ॥५॥

(२८) अत्याचार

मनख हे मन में शोच बिचार ।
मती कर अतरो अत्याचार ॥
करे कणी ने ही डाकण ने कीने ही छन्यार ।
आंटो ओर और अपटालो देख लियो करतार ॥१॥
एक जीभरे शाटे दूजो जाय जमारो हार ।
थूं केवे ज्यूं थने कहे तो कशीक लागे भार ॥२॥
कीधारा फल कदी न छूटे लीजे रोक शम्हार ।
आज और पे बीत रही पण तड़के थारे त्यार ॥३॥
डाकण व्हे' तो शस्त्र सिपाई क्यूँ राखे सिरकार ।
घर बैठां ही मुलक जीतले मूठ मंत्र शूं मार ॥४॥
हिया फूट रो मूठ मंत्र पे झूंठ मूठ इतबार ।
भोपांरी खोपा में खावे भोफा बारंबार ॥५॥
लोभी कठी रशायण करवा लाग ठगांरी लार ।
शामो गरथ गांठ रो खोवे कूटे पछे कपार ॥६॥
पीर शगश रे पाने पड़ पड़ करे धरम धरकार ।
चेतायां शूं भी नी चेते व्हे' लड़वाने त्यार ॥७॥
पड़े शृंगला पंथ मांयने नशा नशावे शार ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(१६)

पगां लागने पागल व्हे' व्हे' घर ने खोय गमार ॥८॥
सांख्य योगरो पंथ पाधरो भूल्यो भटका मार ।
"चातुर" कहे चालवा लागो उलट लोभरी लार ॥६॥

(२६) उजालो

आजरा दिनरो अधिक उजालो। यो दिन शुभ सौना रूपारो॥
मिट्यो मोह तम महा अन्धारो कट्यो क्लेश रो कालो ।
नाहर नींद छोड़ ज्यूं जागो डकर करे ड़ाढालो ॥१॥
गजरा दांत वचन सिद्धांरा सत्त चळ्यां सतियां रो ।
रण में पद शूराँरो वद ने पाछो कद पड़वारो ॥२॥
सुख पग जांघ कथी मिल देखो कौतुक भलो भुजांरो ।
वन थांभे थांभे नभ धरती ढावे जल समदाँरो ॥३॥
सूरज चांद अगन जायांरो नरखों काम नरांरो ।
एक अडग मन फेर अखारो वाश नहीं व्यसनांरो ॥४॥
नात सुधारण मोह वधायो मोह नहीं साथारो ।
करवारो दृढ़ काम अणाँरो वृथा नहीं वकवारो ॥५॥
भू पालक भूपालण जागा जागो भाग सबांरो ।
गुण 'गोपाल' कठा तक गावे गावे भारत शारो ॥६॥

(३०) अरज

म्हारी अरज आपशूं या है । ई में करणा माफ गुना है ॥
जणी वंश में जनम आपरो वींरा विरद बड़ा है ।
बड़ा वंश शूं बड़ा न व्हेवे गुणशूँ बड़ा बड़ा है ॥१॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वाँ पुरुषांरो बोझ ऊँचावो जद तो काम नरा है ।
नीतर नीच जातरा थाँशू कीमें अब ओछा है ॥२॥
बड़ा पणो बातां में नी है नहीं नशा कीधां है ।
रांडां में रबड़या भी नी है नी पेरया गेणां है ॥३॥
मोटर में म्होठा पण नी है ईतो धूम धका है ।
मनुरा मनख धरम * दश पाले वो ही बड़ा खरा है ॥४॥

(३१) अँवलो सुधारो ।

सभै' रो अँवलो आज सुधारो, अणी में वधग्यो थारो म्हारो ।
केवारां उपदेश धरम सब मनरो भतलब न्यारो ।
कहे सो और करे सो औरहि, धीर पणो बातां रो ॥१॥
शीख शीखावे आप न शीखे, दीवा तले अंधारो ।
औरां ने अवगुणी बणावे, गाड़ो वणे गुणांरो ॥२॥
नारी ने पतिवरत शिखावे शीखे आप छभ्यारो ।
कहे पुत्र ने पिता भक्त व्हे' आप बाप पे खारो ॥३॥
दोश आपरो आप न देखे पण देखे दूजांरो ।
सज्जन दोष आपणां देखे साँचो मत संतारो ॥४॥
धरम धरम कथ करम खपावे करे करम पापांरो ।
ढोली वांग पड़े खाड़ा में दोश कई घोड़ारो ॥५॥

---

* धीरज, क्षमा, दम, अचोरी, शुद्धि, इन्द्रियवश, धी, विद्या, सत्य, अरीश

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

औरां रो नहिं थने अँदेशो भोगेगा थूँ थारो ।
'चतुर' कहे चाड़ो मत कोई मन समझायो म्हारो ॥६॥

(३२) गेलारी गम

धरम रा गेला री गम नी है, जोशूँ अतरी लड़ा लड़ी है।
शंकर, बुद्ध, महम्मद ईशा, शबला साँची की' है ।
अरथ सबारो एक मिल्यो है, पण बोली बदली है ॥१॥
थूल गोड़ ने छोड छाड ने पान डाल पकड़ी है ।
निरमल नीर बादलां में पण, धरमें धूल मिली है ॥२॥
जणी तरे' गे काच आँख पे वशी तरे सबही है ।
नीर थरावे काच उतारे, जद तो एक सभी है ॥३॥
आप आपरो मत आछो पण आछो आप नहीं है ।
आप आप रा मत री निन्दा आप आप शूँ व्ही' है ॥४॥
चालेतो शैतानी रस्ते पण, बाजे धरमी है ।
चोरी जारी झूँट जुलमरी, कणी धरम में की' है ॥५॥
अलगी धरी बात आछांरी, पाप्यांरी पकड़ी है ।
यो दिज आछो मारग है, तो भ्रमणा भूल कशी है ॥६॥
पशुवां री पगडंड्यां लागा, पुरुषांरी बिशरी है ।
'चतुर' कहे ई चोड़े धाड़े, नरकां में निकली है ॥७॥

(३३) पटेत पटेल ।

देखलो ई कुदरत रा खेल, व्हे' गिया सगत पटेत पटेल॥
प्रथम एकठा जमा कराने मोटर पड़ा मेल ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शाखो शाख उगावा लागे शेणा टायर तेल ॥१॥
तरं'तरं' री भरे लागतां विशकी वरतण खेल ।
भांत भांतरा भोग भरावे भर भव गाड़ा रेल ॥२॥
पाग पटेलाईरी बदले माथे टोपी मेल ।
शूट बूट टायर क्लालर री, लै सरपावां झेल ॥३॥
आभद मुजब बंध्यो सब हांसल, दड भरे कर फेल ।
आपो छाड़ व्हिया ई अपती' शमझ रिया है शैल ॥४॥

(३४) विद्या

विद्या सीख सीख सुधरांगा, एक भी पग पाछो नी दांगा,
घर में भर्या अखूट खजाना भीख नहीं मांगांगा ।
भीषम हनूमान लछमण ज्यूँ ब्रह्मचर्य पालांगा ॥१॥
जींपे चाल्या बड़ा बड़ावा वीं गेले चालांगा ।
प्रलय काल रो पवन चले पण डग भी नहीं डगाँगा ॥२॥
एक दाण नी दाण हजारां पर्कारज तन दाँगा ।
शूकर,श्वान,काक,बक,खर,ज्यूँ,कही न पेट भरांगा ॥३॥
पछे शिखावांगा दूजा ने पे'ली खुद शीखांगा ।
गृही वणां तो रामचन्द्र सा शुक सा साधु वणांगा ॥४॥
विषय वासरी आश करे वीं मनरो नाश करांगा ।
हकरी बात हमेश करांगा बेशक नी वगड़ांगा ॥५॥

(३५) अविद्या

भण ने लीधी कशो भलाई, गाँठरी सामी समझ गमाई ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आँख ऊपर काच आयग्या जीभ गई जकड़ाई।
डिग्री साथे धरया जेब में दावा केक दवाई।
परमारथ रो पाठ भूल ने कीधी यांद ठगाई।
अँवली घेड़ां मेल माल पे कीधी कणी कमाई।
फोगट फोनोग्राफ ज्यूं ही सब शुण ने परी शुणाई।
गंगाजल शूँ हुई गलानी शोड़ा विशकी भाई ॥३॥
देखण दोष सदा दूजां रा कर कर आप बड़ाई।
विमचार्‌यां भी हार हजारां ब्रह्मचर्य में पाई ॥४॥
तन मन धन ने समै' खरच कर खोटां खूब कमाई।
बातां में तो हाथां में ज्यूं आंखी धरा उठाई ॥५॥
मुख में माल मेल तवला ज्यूं धन धन ताल लगाई।
पेट यांय तो रती न पूग्यो दूजां ने देखाई ॥६॥
ए,बी, री शी, डी, पे'ली ही एबी सीडी आई।
तत् सत् ॐ गणेश शारदा भूल्या राम भलाई ॥७॥

(३६) लोभरो कूड़ो।

लोभरो कूड़ो घणो कवेंतो, ईशूँ रहे राम राखे तो।
चोमेरा शूँ घणो चीकणो, रपटे छेटी रे'तो ॥
समझवार भी सगत पड़े है, चेतो चेतो के' तो।
तीन लोकने नगलरयो यो तीन वेतरो वेतो ॥१॥
लाख लाख शूँ भी नी धापे, एक एक ने ले'तो।
वामन वएयो विराट रूप रो, तीन पाँव धर ले तो ॥२॥
वात वात में तो वधतो जावे, थोड़ो थोड़ो व्हेतो।

. सत रज तम - लोक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विषरी वेलां घणी अणी में शुलझे नी उलझेलो ॥३॥
बार अणीशूं पडे शेलमें राम आशरे रेलो ।
पंच शस्त्रां में नरा पड्या पण, कोई न पायो पेलो ॥४॥
कोई कठी शूं कोई कठो शूं, आवे वे' तो वे' तो ।

(३७) तमाशो ।

तमाशो देख शके तो देख, अचांभो देख शके तो देख,
हिया री खोल अरे पल एक, तमाशो देख शके तो देख,
चोकारी तो चोलण चाले, जात मांय दे छेक ।
चोरी जारी झूंट जुलमने, अवगुण गणे न एक ॥१॥
खोज खबर गंडकांरी राखे, रांड भांड री केक ।
विना धणयारी रे'त हरामी, लूटे होय हरेक ॥२॥
जावकाय अप काय बचावे, दया जीवरी देख ।
अन्न कायरा प्राण उड़ावे खेंच कलम री रेख ॥३॥
ऊँची वातां ऊँचा हाथां, ऊँचा धारै भेख ।
ऊँचा करम बना व्हे ऊँचा, लख लख लाम्बा लेख ॥४॥
चाम, चांक, कपड़ा, केशांरा, करे ऊपरे भेख ।
अठे अणाँपे कटे भरम में, वठे एकरा एक ॥५॥
मरता मनख अनेकां दीखे, रियोन दीखे एक ।
तो पण अमर आपने माने, करे रागने धेक ॥६॥
नो नीं मोरयां वहै शृंगली, भाख्यां भमे अनेक ।
मलने ढांक कहै शणगारां, बिलकुल नहीं विवेक ॥७॥
जनमत रोवे, मरतां रोवे, बचमें रोज अनेक ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रोधाने हँसखो गण लीधो, बालक वाली टेक ॥८॥
गामाने तो गणे सूतरो, खोल न्हाकदे' फेंक ।
ई तनने नी गणे मूतरो, म्हूं म्हूँ नरे उमेख ॥९॥

(३८) सुधारा मे वगाड़ो

मनखां रा सुधारा यूं व्हे' वे दुनियां रा शुधारा यूँ व्हेवे
शड़े पड़े खोटी शंगत में, नाश नशा शूं कर लेवे ।
गालां ने गावे सबला मल, नर ने नार निलज व्हेवे ॥१॥
शृगल पण ने गणे शूर पण, धन दूजाँ रो ठग लेवे ।
हात पगांरे पाटा बाँधे, मूंढा रे मेंदी देवे ॥२॥
माय पिता शूं करे कुचरण्यां, नारी ने निश दिन शेवे ।
के'क दवारा के दावा रा, पाना पाश शदा रेवे ॥३॥
के'क कांचल्या पंथ चलावे, के कूँडा पंथी व्हेवे ।
मेनत रो धन मन नी भावे, मुफती री मनशा रेवे ॥४॥
बद बद करे बड़ाई निजरी, औरांरी कटती केवे ।
पाजी पाश राउ दिन रेवे, हांजी शूं राजी व्हेवे ॥५॥
घररा शूं तो लड़े शेल में, बाहरलांरी खम लेवे ।
पूरव काम पछम में दोड़े, करे नहीं पण के' देवे ॥६॥

(३९) शूरी सतियां ।

बैनां आंपां ओछी नी हां,
ओछी मतरे कणी क्रियो के नीच जात नारी हां ।
नारी हां तो कई व्हियो म्हें नारां री नारी हां ॥१॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुख में सदा पछाड़ी री' हां दुख में आगे व्ही' हाँ।
माथो काट हाथशूं मेल्यो पीतम पे'ली गी'हां ॥२॥
हाथाँ पेट फाड़ पाप्याँ शूं म्हें ललकार लड़ी हाँ।
हँसती धशी धधकती में म्हें अब पण बीरी वी हाँ ॥३॥
शुवरण पुरी शीश दश ऊपर म्हें थूकण वाली हाँ।
सत्यवान रो प्राण वंचायों जम शूं पण जीती हाँ ॥४॥
सिद्धराज रो शाप न लागो कियो कई बुगली हाँ।
कोड्यो खांड्यो पति उँचाय ने वेश्यारं ले'गी हाँ ॥५॥
शूराँ रे जनमी हाँ आँपा शूराँ रे परणी हाँ।
शूराँ री जननी हाँ आँपा पोते ही शूँरी हाँ ॥६॥
सघ ने जगत सुधारण कारण म्हें जग में जनमी हाँ।
"चातुर" देवी कहै शक्ति हाँ आँपा शही सती हाँ ॥७॥

(४०) वणाव

बेनाँ आपणो वणाव घणा मोल रो कराँ,
घणाँ मोल रो कराँ ए अणतोल रो कराँ,
पेली आगली सत्याँ रे पगाँ लागणी कराँ।
पति प्रेम रा पवित्र नीर माँय शाँपडाँ ॥१॥
पी'र शाशरा वखाण रा शुवेश पे'रलाँ।
मेंदी राचणी विचार घरे काम आदरां ॥२॥
पर्गा थीरता संतोष करां नेवर्यां कड़ा।
हिया कंठ में खमारा हार नोशर्या धर्यां ॥३॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कोक दोहीने सुधारवारा चूड़ला करां ।
आछी शीखने करणफूल कांन रा करां ॥४॥
मान राखणो बड़ां रो बोर शीश गूंथलां ।
झूंटा वारला बणाव देख क्यूं वृथा लड़ां ॥५॥
हिया मांय ही अमोल खान खोल पेरलां ।
सभी वारला बणाव यां पे वारणा करां ॥६॥

(४१) बोबण

अनदाता ने शाछा बोया, थाँणा फूटे फूटग्या कोय:
शाता रोल जोड़ स्वाएश री दोई दीन शूँ खोया ॥
केक नशा शूँ नाश करायो के रांडा में रोया ॥१॥
खमा खमा पे'लाँ पे वीं ने लगे लगे घर होया ।
नीच पणा ने उँच पणो गण अँवलो मारग जोया ॥२॥
ठा ठा ठी ठी कर मूँडे चढ़ भाटा बांध डबोया ।
बल विद्या बड़ पण विचार ने पटक पछाड़ निचोया ॥३॥
आखर माथे हाथ मेलने पड़्या उथलणा पोया ।
नी सतकार सबै'रो कीधो पग पसार ने सोया ॥४॥
राज धरम ने आड़ शीख दे गंड धरम में मोया ।
कर्‌या कान पकड़ी छाली ज्यूँ अवे कणी ने को' या ॥५॥

(४२) इन्द्ररो अनाचार ।

राजा इन्द्र तजि इंद्राणी उरमें उलटी समझ समाणी ।
इंद्रयां रा लालच में पड़ने खोटी करी कमाणी ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कामी कुटिल नजर शूँ न्हाल्यो गोतम कामण कानी । १॥
रूम रूम में व्हिया भगंदर झरे शृगलो पाणी !
ढांके अठी वठो ने उगड़े खुलगी' खेंचा ताणी ॥२॥
हलकी देव सभामें लागी लागी घणी ग्लानी ।
आँखाँ पछे खुली पछताणो व्हियो धूलने धाणी ॥३॥
राज छूटग्यो देह बगड़गी' इज्जत डूबी पाणी ।
बड़ा बड़ा री बात बगड़गी' समझ चाल सेलाणी ॥४॥
रावण वाली दंडक कीचक कीं कीं री कूँ' काणी ।
नी माने तो नैन खोलने प्रकट देख पतवाणी ॥५॥

(४३) दारूरी रीत

दारूरी दोय सदाशूँ रीती ।
मर्यां पछे नरकाँ में पड़णो जीतां जीव फजीती ॥
जद शीशो पी मेटदी मद पीवाणी गाल ।
वो मदवी शीशोद अब पीवे शीशा ढाल ॥१॥
मत जावे जद मद पिये मद पीधां मत जाय ।
दोष पगांशूँ दोड़ यूं पूरो पातक मांय ॥२॥
ढांढा के'वारीं थने लागे मोटी गाल ।
ढांढा व्हे'वा री जदी बोतल आगी बाल ॥३॥
पिंड छोड़ नरकां पड्यां शुखिया पापी केक ।
शें देही नरकां सड़े मदवा मनख अनेक ॥४॥
सारा मजवां मांयने आसव करचो अलेख ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मद पीवे वीं मनख रे कठे धरम री केण ॥५॥
धीरप शूँ धीजाय ने वश कर दे विश्वास ।
मूँडे चढ़ ने मारशी बोतल रो बदमाश ॥६॥
धक धक करती धबकती बोतल न्हाखे बाल ।
मूरख रे मन आवती समझ्या रे तो शाज ॥७॥

(४४) इंद्ररो आगम ।

पधारो पधारो म्हारा पृथवीनाथ पधारो। अब मत देर लगाड़ो।
विरहण थारी बाट विलोके दो घन गहन नगारो ।
अब तक चाय रयो चित चातक पलको बोज धजारो ॥१॥
पवन पवंगम ऊपर चढ़ने अठे पलाण उतारो ।
मोर नकीब बोलवा लागे चँवर डढ़े डुगलारो ॥२॥
खूरा अबे उशारा मिटावो हरष हांश पुरभारो ।
आगत पतिका करो कृपा कर बन प्रोषित पतिकारो ॥३॥
हरष हरयो शालूड़ो देवी काम वेल वूंटां रो ।
भोत्यां शूँ मूंगो लूटावो जग ने जल बरषारो ॥४॥
ईं उच्छव री गोठ करावो पेट भरे सबलांरो ।
यो आगम अषाड़ में आयो इन्द्र अन्न दातारो ॥५॥

(४५) महराज साहब देह छोड़वाशूँ
पेली यो पद बणायो

जगदीश्वर जीवाय दियो, थेंही थारो काम कियो ।
दरशण योग दिया कर दाया, मृतकलोक में अमर कियो ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एक एक अक्षर ईश ने, देख देखने दंग रियो।
ईं जग जंगलरा भटकाने, पलमें ही पलटाय दियो।
माँगूं कई कई अब बाकी, अण माँग्यां ही अभय व्हियो॥
आवारा कागद साथे ज्यूँ, आखर पढ़ता आयगियो।
पाराशर पातंजल जोगी, कीके कपिल गुमान कियो॥
दया करे थूँ ही दीनाँपे, भीषम ईश्वर कृष्ण व्हियो।
चोड़ खुल्यो कमाड़ खजानो, देनेभी कीनेक दियो॥
मनख शरीर दियो थें माल्लिक, शागे जनम सुधार दियो।
सोजारा सोजा मारगने, सहजाँही में शोध दियो॥
दया दृष्टिरी आंख देखने सब साधन शूं दूर रियो।
"चातुर' चोर चाकरीरो पण, आखर थें अपणाय लियो॥

❀❀❀❀

महाराज साहब रा आचरण रो भजन

एक गांधर्व बणायो।

जनक ज्यूं जीवन मुक्त रहायो।
कामक्रोध मद लोभ मोह रिपु, रंच न आन सतायो।
आशा तृष्णा दंभ कपट छल, राग द्वेश बिलगायो।
रामायण रघुकुल, मारगने, भिन्न भिन्न समझायो।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीताका सब गूढ़ ज्ञानने, अष्टपद तक पहुँचायो ॥
भगवां भेष कियो नहिं कबहू, नहिं तन भस्म रमायो ।
अलख पचीसी बणाय अपूरब, ब्रह्म ज्ञान प्रगटायो ॥
समदर्शी हो सबने देख्या, निर्मल नेह निभायो ।
क्षात्र तेज में जनम धार ने, ब्रह्म तेज दर्शायो ॥
सांख्य योग सनातन पथरो, पूरो पाठ पढ़ायो ।
तत्पद त्वंपद वाच्य अर्थ तज, लक्ष स्वरूप लखायो ॥
सुरतसिंह सुत चतुर शिरोमणि, परमधाम पद पायो ।
अमरनाम अवनी पर करने, आपमें आप समायो ॥१॥
चतुर बिना चिंता कुण मेटे, यो मन पल पल पलटावे ।
स्वाद सिंगार एक नहीं भावे, कितहूँ नाहि सुहावे ॥
मन बाहीपे भयो निछावर, कौन पे जाय बिकावे ।
आश हती जग मोह पाश पे, चातुर अवश छुड़ावे ।
छोड़ अचानक स्वर्ग सिधाये, कौन दिशा अब धावे ।
कौन पे जाय संदेह मिटावं, उलझी को समझावे ॥
मनरी बात रही मनही में, कां अब ताहि मिलावे ।
मुदित किये जीवन में सबको, संत हृदय विकसावे ॥
स्वर्ग सिधाय दियो दुख सबको, कौन परिचय पावे ।
आखिन ओट भये महाराजा, घट भीतर प्रगटाये ।
स्वजन प्रसादि मिली चिंतामणि, गुण गाया ना जावे ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीगणेशाय नमः।

चतुरचिन्तामणि।

तीजो प्रकाश

०)-(*)-(०

यूँ अविनाशी ऊपरे, दीखे जगत तमाम।
टेशण रा दीवापरे ज्यूँ, टेशण रो नाम ॥१॥
कर्म गुणाँ रा जोग शूँ, सब हुं आपो आप।
ज्यूँ जल रा संजोग शूँ, लखे ऊजले लांप ॥ २ ॥
यूँ थूँदेख शरीर ने, दूरी करने डूँच।
टूटी तरफड़ती थकी, ज्यूँ वसुंधरी पूँछ ॥३॥
काँटो, कादों, रेत, जल, सघला पड़ने पाँव।
रोके रस्ते चालताँ, जश्यो जणीरो दाँव ॥४॥
सूखा चणने सामटा, काचा सूंपे गोल।
वो दन बीसरणो नहीं, लाल रंगरी लोल ॥५॥
छूटी ने छेटी पड़ी, पेंती गुण पचास।
मनखाँ देहो मेलरो चण दोयक रो खास ॥६॥
अकल बिना कल है कटे, ठोकर सघली ठौर।
पसर गियो जो पलक में, कठे कसर ने कौर ॥७॥
बन्या जठे ही बासदी, मरज्या जठे मशाख।
कन्या जठे ही कीच नें, निकल्या जो निरवाध ॥८॥
पसर रियो यो पवन शूँ, अधिक धुँवो अंधार।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निकल शके तो झट निकल, बनता घर शूँ वार ॥९॥
बोले विना विचारने, भले विनाही गौर।
चाले तो चावे कई, जीभ ऊपरे जोर ॥१०॥
है यों ही वो ही अठे, कठे और ठे और।
भूल मिटे तो है भड़े, दुज्यूँ दौड़ा दौड़ ॥ ११ ॥
धा रो ही छो को घणो, कठी न जावे कूद।
भूखो माँ रा दूध रो, धाप्यो माँ रे दूध ॥१२
माता थारा मोह में, कठे लोभ रो लेश।
खेंचे बच्चा वासते, खुद खरगोशण केश ॥१३॥
अंजन रो आगे दियो, पाछे त्रेक प्रकाश।
दौड़ो के डब्बो ढगो थारो थारे पाश ॥१४॥
क्यूँ कूदा कूदी करे, मूँदा मूँदी आँख।
सूधा सूधी देखले, जूदा जूदी न्हाख ॥१५॥
मती डरप रे मेल दे, विश्व-भरण पे भार।
शूँ देवाने क्यूँ डरे, म्हूँ लेवाने त्यार ॥१६॥
सूँगो धन गुरु महर रो, सधो मलग्यो सैल।
सूरख मन दीधो समी, धूला माँय धकैल ॥१७॥
जी दिन आतम ओलख्यो, अलगो लगो अखूट।
बंधन रा भी बलगिया, वी दिन बंधन छूट ॥१८॥
घर घर पग नी मेलणो, विना मान मनवार।
अंजन आवे देखने, सिगला रो सतकार ॥ १९ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

बणी सूत री सींदरी, बणी सूत री पाग ।
बंधवा बंधवा में फरक, जश्यो जणीरो माग ॥२०॥
उपजे आपो आप ही, माग प्रमाणे लाग ।
कोई रे पीटे तालियों, कोई रे खेंचे खाग ॥२१॥
ऊँध सूधने छोडने, करणो काम पछाण ।
ऊँधो सूधो छे घडो, भरती तरती दाँण ॥२२॥
मिले सोखला मनख पण, मिले न मनखाचार ।
फोगट फोनोग्राफ ज्यूँ, बाताँ रा बे'वार ॥२३॥
जीमें जो गुण व्हे नहीं, बींरो बींने दाप ।
ढकी अकीज संत शूँ, लले ऊलले लाँप ॥२४॥
आय गियो तो और भी, अतरो राख विवेक ।
पाट परे ही पड़ मती, देवत ने पण देख ॥२५॥
चावे जतरो छोलजे, बेर भलेई वाड़ ।
मंदर रा म्हारा कदी, करजे मती कमाड़ ॥२६॥
बेर वाड़ ने पाड़जे, चावे जतरो छोड़ ।
चंदण रे गत चौड़जे, खोड़ो घड़ ने खोड़ ॥२७॥
एक सलीरे आसरे, पसरे घटे प्रकाश ।
दीवा ज्यूँ ही देह में, मनसा मुजब उजास ॥२८॥
निकल जावणो टल नखे, यो ही संत सुभाव ।
पग्गे जणीनो पाँव ने मशे जणीरो भाव ॥२९॥
राजा रमणो राज में, दिन में तो है, दास ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इशूँ व्हे वे हरख तो, इंशूँ क्यूँ न उदास ॥३०॥
घड २ कर माथे चड़यो, यो पड़ व्हियो अजोग ।
घडो बीखरयो देखने, कहे ठीकरो लोग ॥३१॥
देखे निजरा दावने, अठी उठी रो डोल ।
लोभीड़ो लोही पिये, माछर मीठो बोल ॥३२॥
फेर फेर में फेर है, जीने जस्यो जणाय ।
नल में तो जल मोकलो, फेर फेर वा मांय ॥३३॥
देखो उछले दौड़ता, जटे जंजीरे छुट ।
बाहर रो घड़ आगलो, खरगोश्यारी पूठ ॥३४॥
कर खण्डभंग शरीर रो, मिलणो धूल कबूल ।
पाणी रा पम ऊपरे, मती फूल रे फूल ॥३५॥
थारा कुल रो कलम यो, म्होटा मंगल सार ।
दौड़ व्हियो क्यूँ दूबलो, लावटियाँ री लार ॥३६॥
बार करण री बार या, नखे आयग्यो ना'र ।
कल पे ही पल दे कई, खटको परो उतार ॥३७॥
आण पड्यो बन्दूकरा, सूंडा माथे ना'र,।
अबे ताकणो है कई, झट कल खेंच गमार ॥३८॥
पान युं ही परमारथी देवे ताप मिटाय ।
नमें फेर शूँला खमें, जद दूना वण जाय ॥३९॥
भोवे लख भगवंत जश, भावे गालाँ भाँड ।
ज्ञात कलम रो दोष नी, मन व्हे' ज्यो ही मांड ॥४०॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एक दूंतरै भाँयने, भाँत,भाँतरी बात ।
अश्यो ज्रणी रो व्हे हिवा, वशी निकाले हात ॥४१॥
चाँगाँ सुख ने चमकणी, भूताल्या में भाज ।
मिलगी धूंधलु साँयने, सब लोबाँ री लाज ॥४२॥
पीतम परदेशाँ गिया, देवे कीने दोश ।
सूरज रो घोडो गम्यो, चंदा रो खरगोश ॥४३॥
दूजा निज गौरव गये,लै'ले' ज्याँरा नाम ।
बाँरा वेश न चाहिजे, कहो कश्यो जद काम ॥४४॥
असी सांवली सायने, अशी उजाली बात ।
दीवा रो ने झोल रो, ज्यूँ सुभाव यो साथ ॥४५॥

इति शुभम् ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आ
भरतनि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi